पवारी (भोयरी) बोली: सांस्कृतिक, भाषाई और लोक साहित्यिक विश्लेषण शिवानी पवार (B.Com, पवारी लेखिका) देवरी, मुलताई
माँ ताप्ती शोध संस्थान, मुलताई प्रस्तावना
पवारी, जिसे भोयरी भी कहते हैं, मध्य भारत के बैतूल, छिंदवाड़ा, और वर्धा जैसे क्षेत्रों में बोली जाने वाली एक भारतीय आर्य भाषाई बोली है। यह बोली राजस्थानी- मालवी भाषा परिवार से संबंधित मानी जाती है, और 2011 की भारतीय जनगणना में हिंदी की उपभाषा के रूप में दर्ज की गई है। पवारी बोली के सांस्कृतिक-लोक साहित्यिक परिप्रेक्ष्य से गहरे अध्ययन में इसकी लोकगीत, संस्कार गीत, विवाह गीत, संस्कार गीत, और अन्य सामाजिक काव्यात्मक अभिव्यक्तियों का समावेश होता है।
यह आलेख पवारी (भोयरी) बोली के लोकसंगीतिक एवं सांस्कृतिक आयामों का विश्लेषण करता है, साथ ही इस बोली की महत्ता, सामाजिक-सांस्कृतिक प्रथाओं, और लोकजीवन में इसकी भूमिका पर प्रकाश डालता है।
पवार/भोयर पवार क्षत्रिय समुदाय का मूल निवास राजस्थान और मालवा क्षेत्र माना जाता है। 15 वीं से 17 वीं शताब्दी के मध्य यह समुदाय सतपुड़ा और विदर्भ की ओर प्रव्रजित हुआ।
• मुख्य प्रव्रजन क्षेत्र: बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्ना और वर्धा।
• प्रव्रजन के बावजूद पवार समुदाय ने अपनी मूल भाषा को संरक्षित रखा।
• इस बोली को केवल पवार समुदाय बोलता है, जिससे इसका जातिगत विशिष्ट संबंध
सिद्ध होता है।
यह प्रव्रजन भाषा के संरक्षण और सामाजिक एकता का प्रमाण है, क्योंकि स्थानीय भाषाओं के बीच रहने पर भी पवारों ने अपनी मातृभाषा को जीवित रखा।
भाषाई वर्गीकरण (Linguistic Classification)
• Glottolog: bhoy1241
• Native to: India
• Language family:
o Indo-European
o Indo-Iranian
o Indo-Aryan
o Rajasthani
o Malvi
o Bhoyari / Pawari

पवारी को राजस्थानी -मालवी भाषा की एक उपबोली माना जाता है। भाषाविज्ञानियों का मत है कि यह रांगड़ी **(Rangri)** बोली से भी जुड़ी है , जिसमें मारवाड़ी , मेवाड़ी और गुजराती का हल्का प्रभाव देखा जाता है।

भौगोलिक वितरण और प्रभाव **(Geographical Distribution and Influences)**

- बैतूल **,** छिंदवाड़ा **,** पांढुर्ना **:** यहाँ बोली अपेक्षाकृत शुद्ध रूप में बोली जाती है। केवल बुंदेली का हल्का प्रभाव देखा जाता है।
- वर्धा **:** यहाँ पवारी पर मराठी का स्पष्ट प्रभाव है , जिससे यह मिश्रित रूप ले लेती है।
- प्रतिष्ठा **:** बैतूल -छिंदवाड़ा की पवारी को सबसे प्रामाणिक और प्रतिष्ठित माना जाता है।

---

1. पवारी बोली का भाषाई परिचय

- पवारी बोली मुख्यतः मध्य भारत के पवार /भोयर जाति के लोग बोलते हैं।
- यह हिंदी की उपभाषा के अंतर्गत आती है , किंतु इसमें राजस्थानी एवं मालवी के प्रभाव भी स्पष्ट दिखाई देते हैं।
- स्थानीय जीवन के साथ घुलमिलकर पवारी बोली विविध सामाजिक गतिविधियों और सांस्कृतिक घटनाओं में अभिव्यक्त होती है।

---

2. लोकसंगीत और गीतों की श्रेणियां

पवारी बोली में लोकगीतों का अत्यंत समृद्ध भण्डार है , जो जीवन के विभिन्न सामाजिक -सांस्कृतिक पक्षों को दर्शाता है। इन गीतों की प्रमुख श्रेणियाँ हैं :

- संस्कार गीत
  - जैसे *"[illegible]"*, *"[illegible]"*
    ये गीत पारिवारिक , धार्मिक और सामाजिक संस्कारों के प्रतीक हैं , जो लोकजन की आस्था और जीवन दर्शन को प्रतिध्वनित करते हैं।
- लोरी
  - जैसे *"[illegible]"*, *"[illegible]"*
    नवजात शिशु के लिए ममता और सुरक्षा भाव लेकर गाए जाने वाले गीत।
- विवाह गीत
  - जैसे *"[illegible]"*, *"[illegible]"*, *"[illegible]"*
    विवाह की तैयारियों , रस्मों और भावनाओं को जीवंत करते हैं।
- मण्डप के गीत
  - विवाह स्थल पर गाए जाने वाले पारंपरिक गीत जो उत्सव के आनंद और सामाजिक मेलजोल की कथा कहते हैं।

• बारात गीत, पड़छन गीत, द्वारचार का गीत, दायजा गीत, विदा गीत
ये गीत विवाह संस्कार के विभिन्न चरणों को दर्शाते हुए भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हैं।

• मृत्यु संस्कार गीत

o जैसे "मऽरो संसार बुझ गयो रे मऽरो राम" आदि, जो जीवन के अंत की
विदाई और श्रद्धांजलि के भाव प्रकट करते हैं।

• सावन-हिण्डोरना, मेहंदी गीत, भुजलिया गीत, घट्टी गीत, शृंगार संबंधी गीत
ये विभिन्न त्योहारों, ऋतुओं, और विवाह-पूर्व/पश्चात सामाजिक समारोहों
के गीत हैं जो स्थानीय जीवन की आभा दिखाते हैं।

• वैयक्तिक पीड़ा के गीत, सजन गोट, वीर गीत: गाथा, पहेलियाँ, खेल गीत,
जनवासा गीत
यह गीत लोकजीवन के विभिन्न सामाजिक, भावनात्मक, और मनोरंजक पहलुओं को
समेटे हुए हैं।

3. गीतों का भाषाई-सांस्कृतिक विश्लेषण

• भावानुवाद और सामाजिक संकेत
पवारी लोकगीत सीधे और सरल भाषा में मनुष्य के जीवन के सुख-दुख, रिश्तों
की जटिलताओं, सामाजिक मान्यताओं और त्योहारों की झलक देते हैं। ये गीत समुदाय की परंपरा, सामाजिक संरचना, और संस्कार व्यवस्था के जीते जागते दस्तावेज़ हैं।

• शब्दावली एवं शैली
गीतों में क्षेत्रीय शब्दों की प्रधानता है, जैसे "मऽ", "अऊर", "गोपाल", "पटोड़ो", "मानुसला" आदि। साथ ही, हिंदी, राजस्थानी और मालवी के प्रभाव
से पवारी बोली की वैशिष्ट्यपूर्ण शब्दावली स्पष्ट होती है।
शैली में छंदबद्धता, पुनरावृत्ति और स्थानीय धुन का मिश्रण गीतों को सामूहिक रूप से यादगार और प्रभावशाली बनाता है।

• सामाजिक संदर्भ
विवाह गीतों में सामाजिक व्यवस्था, दायजा, बारात, सगाई आदि परंपराओं का निरूपण और मानवीय भावनाओं का समावेश महत्वपूर्ण है। मृत्यु संस्कार
गीत जीवन के अनंत चक्र को दर्शाते हैं।
साथ ही, वीर गीत और गाथाएँ समाज के आदर्श और लोकनायक की महिमा को बढ़ावा देती हैं।

सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व (Socio-Cultural Significance)

1. समुदाय की पहचान: पवारी बोली पवार जाति की विशिष्ट पहचान है।

2. लोकगीत और अनुष्ठान: विवाह, जन्म, मृत्यु और त्योहार – सभी सामाजिक
अवसरों पर पवारी गीत अनिवार्य माने जाते हैं।

3. सांस्कृतिक एकता: भाषा और गीत समुदाय को जोड़ते हैं और नई पीढ़ियों तक
परंपराएँ पहुँचाते हैं।

4. इतिहास की स्मृति: वीर गीत और प्रव्रजन कथाएँ समुदाय के इतिहास को
संरक्षित रखती हैं।

4. लोकगीतों के कुछ उदाहरण

पांढरी की ओ माता-माय
एक माता की भक्ति और परिवार की सुरक्षा की भावना से ओत-प्रोत, यह गीत पारिवारिक संस्कारों में गायी जाती है।

भैय्या घरअ् भयो नंदलाल
परिवार की खुशहाली और भाई-बहन के प्रेम को अभिव्यक्त करता लोकगीत।

झूलना मऽ झूलय बारा रे
शिशु के झूलने की कोमलता और स्नेह की अभिव्यक्ति।

सगाई गीत
सगाई की पूर्व तैयारी व उत्साह को दर्शाता आनंददायक गीत।

5. पवारी बोली की विशेषताएँ

• पवारी बोली में हिंदी, मराठी के साथ राजस्थानी तथा मालवी के शब्दों का
समृद्ध मिश्रण देखा जाता है।

• यह बोली मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र के सीमावर्ती क्षेत्रों की सामाजिक-
सांस्कृतिक व्यवहार, धार्मिक रस्मों और आदतों से अभिन्न रूप से जुड़ी
हुई है।

• बोली के लोकगीत, पहेलियाँ, गाथाएँ जनजीवन के परस्पर संबंध, भावनाओं और
संस्कारों का सजीव प्रमाण हैं।

6. निष्कर्ष

पवारी (भोयरी) बोली न केवल एक भाषाई माध्यम है, बल्कि मध्य भारत के पवार/भोयर समुदाय की सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जीवनशैली का भी प्रतिनिधित्व करती है। इसके लोकगीत एवं सांस्कृतिक गीत समाज की परंपरा, उत्सव, विवाह, शोक और दैनिक जीवन की झलक प्रस्तुत करते हैं। ये गीत लोकजीवन के सांस्कृतिक अवयवों को बचाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अतः पवारी बोली और इसका लोकसाहित्य भाषा संरक्षण, सांस्कृतिक अध्ययन और जन-धरोहर के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन संपदाओं का उचित संरक्षण और प्रोत्साहन आवश्यक है ताकि यह अमूल्य विरासत आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रहे।

माँ ताप्ती शोध संस्थान, मुलताई